1. मुद्रा की प्रकृति और परिभाषा
(NATURE AND DEFINITION OF MONEY)

मुद्रा के अर्थ और प्रकृति के सम्बन्ध में बहुत मतभेद और भ्रान्ति चली आ रही है। जैसा कि स्कितोव्स्की ने लक्ष्य किया है, "मुद्रा की धारणा को परिभाषित करना कठिन है, आंशिक रूप से तो इसलिए कि यह एक नहीं तीन कार्य करती है, जिनमें से प्रत्येक कार्य मुद्रात्व की कसौटी प्रदान करता है। ये कार्य हैं: (i) लेखा की इकाई, (ii) विनिमय का माध्यम, और (iii) मूल्य का संचय।"[1] यद्यपि स्कितोव्स्की ने मुद्रात्व (moneyness)[2] के कारण मुद्रा को परिभाषित करने की कठिनाई की ओर संकेत किया है तथापि उसने मुद्रा की व्यापक परिभाषा दी है। प्रो. **कोलबोर्न** (Coulborn) की परिभाषा के अनुसार मुद्रा मूल्यांकन तथा भुगतान का माध्यम है; लेखा की इकाई के रूप में भी तथा विनिमय के सामान्यत: स्वीकार्य माध्यम के रूप में भी।" (Money is the means of valuation and of payment; as both the unit of account and the generally acceptable medium of exchange). कोलबोर्न की परिभाषा बहुत व्यापक है। उसने इस परिभाषा में 'मूर्त' मुद्रा (concrete money) जैसे—सोना, चैक, सिक्के, करेन्सी, नोट, बैंक ड्राफ्ट आदि को तो शामिल किया ही है, साथ ही अमूर्त मुद्रा (abstract money) को भी ले लिया है जो हमारे मूल्य, कीमत तथा योग्यता के विचारों की वाहिका है। इस तरह की व्यापक परिभाषाएं देखकर सर जॉन हिक्स ने कहा था, "मुद्रा अपने कार्यों से परिभाषित होती है, जिस किसी वस्तु को मुद्रा की भांति प्रयोग किया जाए वही मुद्रा बन जाती है। मुद्रा वही है जो मुद्रा का काम करे।" (Money is defined by its functions: anything is money which is used as money; 'money is what money does')[3] ये मुद्रा की कार्यात्मक परिभाषाएं हैं क्योंकि ये मुद्रा को उसके कार्यों की दृष्टि से परिभाषित करती हैं।

कुछ अर्थशास्त्री मुद्रा को कानून की शब्दावली में परिभाषित करते हैं और कहते हैं, "जिस किसी चीज को सरकार मुद्रा घोषित कर दे, वही मुद्रा है।" इस तरह की मुद्रा को सामान्यरूप से सभी स्वीकार करते हैं और इसमें ऋण चुकाने की कानूनी शक्ति होती है। परन्तु हो सकता है कि लोग वैध मुद्रा स्वीकार न करें और उसके बदले में वस्तुएं तथा सेवाएं बेचने को तैयार न हों। दूसरी ओर संभव है कि

---

1. T. Scitovsky, *Money and the Balance of Payments*, 1969.
2. मुद्रात्व का अर्थ है तरलता। जिन वस्तुओं में तरलता होती है उन सबमें मुद्रात्व होती है।
3. John Hicks, *Critical Essays in Monetary Theory*, 1967.

Scanned with CamScanner

लोग ऐसी चीजों को मुद्रा के रूप में स्वीकार कर लें जिन्हें ऋण चुकाने के लिए कानूनी तौर पर मुद्रा नहीं कहा गया, परन्तु जो खूब प्रचलित हों। इस तरह की चीजें, कमर्शियल बैंकों द्वारा जारी किए गए चैक और नोट हैं। इस प्रकार, वैधता के अतिरिक्त भी कुछ ऐसी बातें हैं जो कुछ चीजों को मुद्रा बनाती हैं।

2. मुद्रा की सैद्धांतिक और अनुभवसिद्ध परिभाषाएं
(THEORETICAL AND EMPIRICAL DEFINITIONS OF MONEY)

मुद्रा की परिभाषा के बारे में अर्थशास्त्री एकमत नहीं हैं, इसलिए प्रो. जॉनसन[1] इस संबंध में चार मुख्य विचारधाराओं का उल्लेख करता है जिनकी पेसक और सेविंग के विचार के साथ नीचे विवेचना की गई है।

1. **परंपरागत परिभाषा** (Traditional Definition of Money)—परंपरागत विचारधारा, जिसे करेंसी संप्रदाय भी कहते हैं, के अनुसार, मुद्रा को करेंसी और मांग जमा कहा गया है। इसका सबसे महत्वपूर्ण कार्य विनिमय के माध्यम के रूप में है। केन्ज़ ने परंपरागत विचारधारा का पालन करते हुए अपनी पुस्तक General Theory में नकदी और बैंकों की मांग जमा को मुद्रा परिभाषित किया। हिक्स ने अपने Critical Essays in Monetary Theory में मुद्रा की प्रकृति के परंपरागत तिहरे वर्गीकरण को बताया है: "लेखा की इकाई, भुगतान करने का साधन और मूल्य के संचय के रूप में।" बैंकिंग संप्रदाय ने मुद्रा की परंपरागत परिभाषा को मनमानी कहकर इसकी आलोचना की। इसमें मुद्रा का अर्थ बहुत संकुचित है क्योंकि अन्य परिसंपत्तियां भी हैं जो समानरूप से विनिमय का माध्यम स्वीकार की जाती हैं। इनमें कमर्शियल बैंकों के समय जमा-पत्र, विनिमय बिल, आदि शामिल हैं। इन परिसंपत्तियों की उपेक्षा करके परंपरागत विचारधारा उनके प्रभाव से उनके वेग (velocity) का विश्लेषण करने में समर्थ नहीं है। फिर, इनको मुद्रा की परिभाषा से निकालकर, केन्ज़वादी मुद्रा के ब्याज-लोच मांग फलन पर अधिक बल देते हैं। अनुभवसिद्ध तौर से उन्होंने ब्याज दर द्वारा उत्पादन और मुद्रा के स्टॉक के बीच संबंध स्थापित किया।

2. **फ्रीडमैन की परिभाषा** (Friedman's Definition of Money)—मुद्रा से फ्रीडमैन का अभिप्राय है, "अक्षरश: वे सभी डालर जो लोग अपनी जेबों में लिए घूमते हैं, और वे सभी डालर जो मांग जमा और वाणिज्यिक बैंक के पास समय जमा के रूप में उनके बैंक खातों में हैं।" अत: उसकी परिभाषा के अनुसार, मुद्रा "करेंसी और कमर्शियल बैंकों की कुल समायोजित जमाओं का जोड़ है।" (the sum of currency plus all adjusted deposits in commercial banks).[1] यह मुद्रा की व्यावहारिक परिभाषा है, जिसका फ्रीडमैन और शर्वाटज़ चुने हुए 1929, 1935, 1950, 1955 और 1960 वर्षों के लिए अमरीका की मौद्रिक प्रवृत्तियों के अनुभवसिद्ध अध्ययन के लिए प्रयोग करते हैं। यह मुद्रा की संकुचित परिभाषा थी और कमर्शियल बैंकों के दोनों मांग और समय-जमाओं में समायोजन (adjustment) तथा समाज और कमर्शियल बैंकों की बढ़ रही वित्तीय कृत्रिमता को ध्यान में रख कर रची गई थी। परन्तु फ्रीडमैन इस कृत्रिमता का एक सूचक भी स्थापित नहीं कर सका। इस समायोजन के साथ भी, नकद और जमा मुद्राओं की दीर्घकाल तक पूरी तरह से तुलना (comparison) नहीं की जा सकी थी। फिर भी, 1950, 1955 और 1960 के लिए सहसंबंध प्रमाण (correlation evidence) ने मुद्रा की इस विस्तृत परिभाषा का सुझाव दिया: "कोई परिसंपत्ति जो क्रय शक्ति के

1. H.G. Johnson, *"Monetary Theory and Policy,"* A.E.R., June. 1962

Scanned with CamScanner

अस्थाई निवास के रूप में क्षमता रखती हो।'' (Any asset capable of serving as a temporary abode of purchasing power).[1]

इस प्रकार फ्रीडमैन मुद्रा की दो प्रकार की परिभाषाएं देता है। एक सैद्धांतिक आधार पर और दूसरी अनुभवसिद्ध आधार पर। इससे बहुत वाद-विवाद उत्पन्न हुआ जिसे फ्रीडमैन ने कार्यपद्धति-विषयक (methodological) विवादों के आधार पर सुलझाने का प्रयत्न किया। फ्रीडमैन के अनुसार, ''मुद्रा की परिभाषा की खोज नियम के आधार पर नहीं करनी चाहिए बल्कि आर्थिक संबंधों के हमारे ज्ञान को सुव्यवस्थित करने में लाभदायकता के आधार पर।''[2] अत: अनुभवसिद्ध उद्देश्यों के लिए प्रयोग की गई परिभाषा अमहत्वपूर्ण है क्योंकि भिन्न परिभाषाएं भिन्न परिणाम देंगी। अनुभवसिद्ध परिणाम अन्तत: परिसंपत्तियों की प्रकृति पर निर्भर करेंगे जो मुद्रा की क्रयशक्ति के अस्थाई निवास के रूप में परिभाषा में सम्मिलित है। इस प्रकार फ्रीडमैन मुद्रा की अपनी परिभाषा में दृढ़ (rigid) नहीं है और विस्तृत दृष्टिकोण रखता है जिसमें बैंक जमा, गैर-बैंक जमा और कई अन्य प्रकार की परिसंपत्तियां शामिल होती हैं, जिनके द्वारा मौद्रिक अधिकारी रोजगार, कीमतों और आय के भावी-स्तर या किसी अन्य महत्वपूर्ण समष्टि चर को प्रभावित करता है।

3. **रेडक्लिफ की परिभाषा** (Radcliffe Definition)—रेडक्लिफ समिति[3] ने मुद्रा को ''नोट योग बैंक जमा'' (note plus bank deposits) के रूप में परिभाषित किया। इसमें केवल वे परिसंपत्तियां शामिल हैं, जो सामान्यतौर से विनिमय के माध्यम के रूप में प्रयोग की जाती हैं। परिसंपत्तियों से अभिप्राय तरल परिसंपत्तियों से है जिनका अर्थ है वस्तुओं और सेवाओं के लिए कुल प्रभावी मांग को प्रभावित कर रही मौद्रिक मात्रा। इसमें व्यापक रूप से साख (credit) को शामिल समझा जाता है। इस प्रकार, समस्त तरलता स्थिति व्यय करने के निर्णयों से संबद्ध होती है। व्यय करना बैंक में नकदी या मुद्रा तक सीमित नहीं है, बल्कि मुद्रा की वह मात्रा है जिसे लोग एक परिसंपत्ति बेचकर या उधार लेकर या जैसे बिक्री से प्राप्त आय समझकर धारण कर सकते हैं। समिति ने मुद्रा के प्रचलन वेग (velocity of circulation) की धारणा का प्रयोग नहीं किया क्योंकि संख्यात्मक स्थिरांक के रूप में इसमें कोई भी व्यावहारिक मात्रा नहीं पाई जाती है।

अशोधित अनुभवसिद्ध प्रयोगों के आधार पर कमेटी ने ब्याज दर द्वारा मुद्रा और आर्थिक क्रिया के बीच प्रत्यक्ष या परोक्ष संबंध नहीं पाया। परन्तु उसने सरलता के आधार पर इनमें नया संक्रमण तंत्र (transmission mechanism) प्रदान किया। उसने व्याख्या की कि ब्याज दरों में गति का अर्थ है वित्तीय संस्थाओं द्वारा धारित बहुत-सी परिसंपत्तियों के पूंजी मूल्य में महत्वपूर्ण परिवर्तन। ब्याज दरों में वृद्धि होने से कुछ उधारदाता कम उधार देते हैं, क्योंकि पूंजी मूल्य गिर जाते हैं और अन्य इसलिए कि उनका ब्याज-दर ढ़ाचा दृढ़ (sticky) होता है। दूसरी ओर, ब्याज दर में गिरावट उनके तुलन-पत्रों में वृद्धि करती है और उधारदाताओं को नया व्यवसाय खोजने के लिए प्रोत्साहित करती है।

4. **गुर्ले-शा परिभाषा** (Gurley-Shaw Definition)—गुर्ले तथा शा[4] वित्तीय मध्यस्थों द्वारा रखी गई काफी मात्रा में तरल परिसंपत्तियां और गैर-बैंक मध्यस्थों की देयताओं को मुद्रा के निकट स्थानापन्न समझते हैं। मध्यस्थ संचय के रूप में मुद्रा के लिए स्थानापन्न प्रदान करते हैं। यथार्थ मुद्रा

---

1. M. Friedman : *Employment, Growth and Price Level*, 1959.
2. M. Friedman and A.J. Schwartz : *Monetary, Statistics of the United States*, 1970.
3. *Report of the Committee on the Working of the Monetary System*, 1959.
4. J.G. Gurley and E.S. Shaw, *Money in a Theory of Finance*, 1960.

Scanned with CamScanner

जिसे करेंसी योग मांग जमा परिभाषित किया गया है, केवल एक तरल परिसंपत्ति है। इस प्रकार, उन्होंने तरलता पर आधारित मुद्रा की एक विस्तृत परिभाषा निर्मित की है जिसमें बांड, इंशयोरेंस रिज़र्व, पेंशन फंड, बचत और ऋण शेयर शामिल हैं। वे मुद्रा स्टॉक के वेग (velocity) में विश्वास रखते हैं जो गैर-बैंक मध्यस्थों द्वारा प्रभावित होता है। उनके मुद्रा की परिभाषा पर विचार अपने और गोल्डस्मिथ की अनुभवसिद्ध जांचों पर आधारित हैं।

5. **पेसक-सेविंग परिभाषा** (Pesek-Saving Definition)—पेसक और सेविंग[1] के अनुसार, मुद्रा में बैंकों के मांग जमा और सरकार द्वारा जारी मुद्रा शामिल होने चाहिएं। वे बैंक मुद्रा में समय और बचत खाते शामिल नहीं करते हैं। वे कुल मुद्रा को, जिसमें मांग-जमा शामिल है, समाज की शुद्ध संपत्ति मानते हैं। वे मुद्रा की ऋण के साथ तुलना करते हैं। मुद्रा ब्याज नहीं देती लेकिन ऋण ब्याज देता है। ऋण स्वयं संपत्ति नहीं है, क्योंकि जो बैंक मुद्रा को धारण करते हैं, उसे एक परिसंपत्ति मानते हैं, जबकि बैंक उसे प्रभावी देयता मानते हैं।

इस प्रकार, पेसक और सेविंग मुद्रा की एक व्यवहार्य परिभाषा का अनुसरण करते हैं जिसमें तीन शर्तें शामिल हैं: *प्रथम*, वे वस्तु, मुद्रा और आदेश (fiat) मुद्रा को उनके धारकों की परिसंपत्ति के रूप में मानते हैं और किसी की भी देयताएं नहीं मानते। *दूसरे*, सरकार कमर्शियल बैंकों को मुद्रा निर्माण के लिए एकाधिकार अधिकार प्रदान करती है,[2] जो आगे व्यक्तियों के निजी ऋणों के लिए बैंक मुद्रा बेचकर इसका प्रयोग करते हैं। जिन व्यक्तियों के पास बैंक मुद्रा होती है वे इसे पूर्णरूप से एक परिसंपत्ति मानते हैं। दूसरी ओर, बैंक इसे एक प्रभावी देयता मानते हैं। अत: पेसक और सेविंग बैंक मुद्रा *घटा* रिज़र्व (जो बैंक अपने जमाकर्त्ताओं की मांग को पूरा करने के लिए रखते हैं) को अर्थव्यवस्था की शुद्ध परिसंपत्ति मानते हैं। तुलन-पत्र में, बैंक मुद्रा को एक परिसंपत्ति और निजी ऋणों को एक देयता दिखाया जाता है। *तीसरे*, यदि बैंक मुद्रा निर्मित करना लागतरहित हो और जमा पर कोई ब्याज भुगतान नहीं दिए जाते, तो बैंक को शुद्ध संपत्ति (net worth) अपरिवर्तित रहती है क्योंकि परिसंपत्तियां और देयताएं दोनों समान मात्रा में बढ़ते हैं। यह दर्शाता है कि बैंक की शुद्ध संपत्ति शून्य है।

पेसक और सेविंग बैंक मुद्रा में समय और बचत जमाओं को शामिल नहीं करते हैं। परन्तु जब ब्याज भुगतान हों तो वे बैंक मुद्रा में सम्मिलित होते हैं। उनका तर्क है कि एक बार जब ये जमाएं ब्याज देना प्रारंभ करती हैं, तो वे मुद्रा का कार्य करती रहेंगी।

आलोचनाएं *(Criticism:)*—पेसक एवं सेविंग की परिभाषा की निम्न आलोचनाएं की गई हैं—

1. फ्रीडमैन और शवार्टज के अनुसार, पेसक एवं सेविंग की स्थिति का तर्क यह है कि मुद्रा शुद्ध-संपत्ति के रूप में उच्च शक्तियुक्त मुद्रा (high-powered money) होनी चाहिए जिसे पेसक एवं सेविंग ने बहुत संकुचित कहकर अस्वीकार कर दिया। इस प्रकार, उच्च-शक्तियुक्त मुद्रा पेसक एवं सेविंग की प्रथम कसौटी को पूरा करती है।

2. पेसिक एवं सेविंग विश्लेषण में पेटिनकिन कुछ भ्रांति पाता है, जब वे बैंक-मुद्रा में समय और बचत जमा शामिल नहीं करते हैं। पेसिक एवं सेविंग बैंकों द्वारा प्रयोग किए गए परंपरागत लेखांकन तरीकों की भी आलोचना करते हैं। परन्तु पेटिनकिन उनके मुद्रा निर्माण के विश्लेषण की परंपरागत

---

1. B.P. Pesek and T.R. Saving, *Money, Wealth and Economic Theory*, 1967.
2. अमरीका में पांच बड़े बैंकों को नोट छापने का अधिकार प्राप्त है।

Scanned with CamScanner

लेखांकन द्वारा व्याख्या करता है और उसे अधिक लाभदायक पाता है।

3. पेसिक एवं सेविंग की आलोचना सामाजिक संपत्ति को परिभाषित करने में बैंक-मुद्रा की दोहरी गणना करने के लिए भी की गई है। *प्रथम*, वे इसमें मुद्रा पूर्ति का भाग शामिल करते हैं, और फिर वे बैंकिंग प्रणाली को शुद्ध संपत्ति को अन्य तत्व में सम्मिलित करते हैं। वास्तव में, एक या दूसरे की गणना करनी चाहिए, न कि दोनों की।

इन आलोचनाओं के बावजूद, पेसक और सेविंग का मुद्रा पर विचार महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे शुद्ध संपत्ति का अध्ययन करते हैं जो कमर्शियल बैंकों को प्राप्त होती है।

3. मुद्रा का वर्गीकरण अथवा प्रकार (CLASSIFICATION OR TYPES OF MONEY)

मुद्रा का वर्गीकरण विभिन्न आधारों पर किया जाता है—(1) जिन वस्तुओं से मुद्रा बनाई गई है उनकी भौतिक विशिष्टताएं या मौद्रिक प्रणाली कसौटी; (2) मुद्रा को जारी करने वाले की प्रकृति जैसे सरकार, केन्द्रीय बैंक, कमर्शियल बैंक, अथवा अन्य कोई या स्वीकार्यता कसौटी; और (3) मुद्रा के रूप में मुद्रा के मूल्य तथा वस्तु के रूप में मुद्रा के मूल्य के बीच सम्बन्ध जिसे केन्ज़ लेखा मुद्रा तथा यथार्थ मुद्रा कहता है। मुद्रा के विभिन्न प्रकारों की व्याख्या करने में हम मोटे तौर पर इसी वर्गीकरण का अनुसरण करेंगे।

1. मुद्रा-प्रणाली कसौटी (Monetary System Criterion)

मुद्रा-प्रणाली कसौटी मुद्रा का तीन प्रकार से वर्गीकरण करती है: 1. धातु मुद्रा; 2. कागज मुद्रा; और 3. साख मुद्रा। जिनकी व्याख्या यहां की जा रही है—

(1) धातु-मुद्रा (Metallic Money) सोना, चांदी, निकल, तांबा आदि जैसी किसी भी धातु से बनी मुद्रा को धातु-मुद्रा कहते हैं। धातु-मुद्रा का आगे मानक मुद्रा, प्रतीक मुद्रा तथा सहायक मुद्रा के रूप में वर्गीकरण किया गया है।

(i) मानक मुद्रा (Standard Money)—मानक मुद्रा "वह मुद्रा है जिसका मूल्य वस्तु के रूप में गैर-अमौद्रिक उद्देश्यों के लिए भी उतना ही है जितना की मुद्रा के रूप में उसका मूल्य है।" इस तरह की मुद्रा सिक्कों के रूप में होती है जिसका अंकित मूल्य उसके यथार्थ मूल्य अथवा धातु-मूल्य के बराबर होता है। इस तरह के सिक्कों का धारक चाहे तो उन्हें पिघलाकर धातु के रूप में अथवा मुद्रा के रूप में प्रयोग कर सकता है, क्योंकि सिक्कों में धातु का मूल्य उतना ही होता है जितना उनका मौद्रिक मूल्य है। इसलिए मानक मुद्रा को पूर्ण मूल्य मुद्रा भी कहते हैं। 1835 से 1893 के बीच भारत का एक रुपये का सिक्का पूर्ण-मूल्य सिक्का होता था। फिर, मानक मुद्रा ऐसी असीमित वैध मुद्रा (legal tender) है जिसमें कितनी भी राशि का भुगतान किया जा सकता है।

(ii) प्रतीक मुद्रा (Token Money)—प्रतीक मुद्रा वह प्रतिनिधि मुद्रा है जिसका यथार्थ मूल्य उसके अंकित मूल्य से कम होता है। भारत में जो एक रुपये का सिक्का चल रहा है, वह प्रतीक सिक्का है। यदि उसे पिघलाया जाए, तो इसकी धातु एक रुपये में नहीं बिकेगी।

(iii) सहायक मुद्रा (Subsidiary Money)—सहायक मुद्रा का काम प्रतीक मुद्रा की सहायता करना है। पांच पैसे से 25 पैसे तक के जो सिक्के भारत में चलते हैं, वे सभी सहायक मुद्रा हैं। इस तरह के सिक्के वैध मुद्रा हैं जिनसे भारत में केवल 25 रुपये तक का भुगतान किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

2. कागज मुद्रा (Paper Money)

कागज-मुद्रा से तात्पर्य कागज के बने विभिन्न अंकित मूल्य के नोटों से है जिसे देश का केन्द्रीय बैंक तथा/अथवा सरकार जारी करती है। कागज-मुद्रा को प्रतिनिधि कागज-मुद्रा, परिवर्तनीय कागज-मुद्रा, अपरिवर्तन कागज-मुद्रा और आदेश कागज-मुद्रा के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।

(i) प्रतिनिधि कागज-मुद्रा (Representative Paper Money)—प्रतिनिधि कागज-मुद्रा "वास्तव में पूर्ण-मूल्य सिक्कों अथवा उनके बराबर के स्वर्ण-बुलियन की मालगोदाम रसीद है जो प्रचलन में होती है।" इसे प्रतिनिधि पूर्ण-मूल्य मुद्रा भी कहते हैं क्योंकि यह सरकारी खजाने में रखे स्वर्ण सिक्कों अथवा बुलियन से पूर्णतया समर्थित होती है। जो स्वर्ण-प्रमाणपत्र संयुक्त राज्य अमरीका में 1933 से पहले चलते थे, वे प्रतिनिधि कागज मुद्रा थे।

(ii) परिवर्तनीय कागज मुद्रा (Convertible Paper Money)—परिवर्तनीय कागज-मुद्रा वह मुद्रा होती है जिसे मानक सिक्कों अथवा बुलियन के रूप में शत-प्रतिशत समर्थन प्राप्त नहीं होता। परन्तु कागज मुद्रा का धारक (holder) उसे मांग पर बुलियन अथवा सिक्कों में बदलवा सकता है। प्रतिनिधि और परिवर्तनीय कागज मुद्रा दोनों में इतना ही अन्तर होता है कि प्रतिनिधि कागज-मुद्रा को तो मानक सिक्कों अथवा बुलियन का पूर्ण समर्थन प्राप्त होता है जबकि परिवर्तनीय कागज-मुद्रा को उनका पूर्ण समर्थन प्राप्त नहीं होता। परन्तु दोनों ही प्रकार की कागज मुद्रा परिवर्तनीय होती है।

(iii) अपरिवर्तनीय कागज मुद्रा (Inconvertible Paper Money)—जिस कागज मुद्रा को मानक सिक्कों अथवा बुलियन का कोई समर्थन प्राप्त नहीं होता और जिसे उनमें बदलवाया भी नहीं जा सकता उसे अपरिवर्तनीय कागज मुद्रा कहते हैं। सब देशों के केन्द्रीय बैंकों द्वारा जारी किए गए नोट अपरिवर्तनीय कागज मुद्रा होती है। इसे प्रत्ययी (fiduciary) मुद्रा भी कहते हैं।

(iv) *आदेश या अधिदिष्ट-मुद्रा (Fiat Money)*—जो कागज-मुद्रा सरकार के आदेश पर प्रचलित होती है उसे आदेश मुद्रा कहते हैं। आदेश मुद्रा प्रतिनिधि अथवा प्रतीक मुद्रा है जो राज्य द्वारा निर्मित अथवा जारी की जाती है, परन्तु जिसे कानून द्वारा अपने अतिरिक्त किसी अन्य वस्तु से नहीं बदला जा सकता। यह वैध मुद्रा होती है। भारत सरकार द्वारा जारी प्रतीक सिक्के आदेश मुद्रा हैं। वित्त मंत्रालय द्वारा जारी एक रुपये के नोट, जिनका छापना अब बंद हो गया है पर प्रचलन में हैं, भी आदेश मुद्रा हैं। आज कल व्यवहार में आदेश मुद्रा और अपरिवर्तनीय कागज मुद्रा में कोई भेद नहीं है।

3. स्वीकार्यता कसौटी (Acceptability Criterion)

स्वीकार्यता कसौटी के आधार पर मुद्रा को वैध मुद्रा और अवैध मुद्रा में वर्गीकृत किया जा सकता है।

(1) वैध मुद्रा (Legal Tender Money)—वैध मुद्रा वह मुद्रा है जिसे सरकार तथा जनता दोनों ही भुगतान और ऋण चुकाने के साधन के रूप में स्वीकार करते हैं। क्योंकि इसे सरकार की मंजूरी प्राप्त है, इसलिए लोगों को इस तरह की मुद्रा अनिवार्यत: स्वीकार करनी पड़ती है। किसी देश की सरकार और केन्द्रीय बैंक द्वारा जारी किए गए नोट और सिक्के उस देश में अनिवार्य वैध मुद्रा होती है। वैध मुद्रा को आगे सीमित तथा असीमित वैध मुद्रा में विभक्त किया गया है।

(i) सीमित वैध मुद्रा (Limited Legal Tender Money)—यह वह मुद्रा है जिसमें कानूनी तौर से एक निश्चित सीमा तक भुगतान किया जा सकता है। भारत में 1 पैसे के सिक्के से लेकर 25 पैसे तक के सिक्के सीमित वैध मुद्रा हैं। इन सिक्कों में 25 रु. तक का भुगतान ही किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

(ii) असीमित वैध मुद्रा (Unlimited Legal Tender Money)—वह मुद्रा असीमित वैध तब होती है। जब असीमित मात्रा में कानूनी तौर पर इसमें भुगतान किया जा सकता हो। भारत में, सभी कागज के नोट और पचास पैसे, एक, दो और पांच रुपये के सिक्के असीमित वैध मुद्रा हैं। लोगों को नोटों और इन सिक्कों में असीमित राशि का भुगतान स्वीकार करना पड़ता है।

(2) अवैध मुद्रा (Non-legal Tender Money)—जिस मुद्रा को सरकार अथवा केन्द्रीय बैंक की कानूनी मंजूरी प्राप्त नहीं होती उसे अवैध मुद्रा कहते हैं। राबर्टसन ने इसे "ऐच्छिक (Optional) मुद्रा" की संज्ञा दी है। चैकों, हुंडियों और प्रोनोटों आदि के रूप में प्रचलित मुद्रा अवैध मुद्रा है। लोगों को इस तरह की मुद्रा स्वीकार करने पर बाध्य नहीं किया जा सकता, क्योंकि इनके निर्गम को कानूनी मान्यता प्राप्त नहीं है। चैक और ड्राफ्ट के अलावा, ऐच्छिक मुद्रा के अन्य रूप भी हैं, जैसे सावधि जमा, बांड, प्रतिभूतियां, डिबेंचर, विनिमय पत्र, खजाना पत्र, पोस्ट ऑफिस सर्टिफिकेट, इंश्योरेंस, पालिसी, आदि। वे 'निकट मुद्रा' या 'मुद्रा स्थानापन्न' कहलाते हैं। वे मूल्य के संचय के रूप में लगभग पूर्ण स्थानापन्न हैं। उनमें तरलता पाई जाती है और उनसे आय प्राप्त होती है। वे करेंसी के प्रयोग में बचत लाते हैं। परन्तु वे वैध नहीं होते हैं।

3. लेखा मुद्रा तथा यथार्थ मुद्रा (Money of Account and Money Proper)

केन्ज़ ने लेखा मुद्रा तथा यथार्थ मुद्रा में भेद किया है। उसके मतानुसार "लेखा मुद्रा वह मुद्रा है जिसमें ऋण और कीमतें और सामान्य क्रयशक्ति को व्यक्त किया जाता है।" दूसरी ओर यथार्थ मुद्रा वह वास्तविक मुद्रा है जिसमें ठेकों तथा ऋणों का हिसाब चुकाया जाता है जैसे भारतीय रुपया, इंग्लैण्ड का पौंड, अमरीकी डालर, फ्रांस का फ्रैंक, इटली का लीरा इत्यादि। आमतौर पर, जब देश के भीतर यथार्थ मुद्रा में हिसाब-किताब रखा जाता है, तो यथार्थ मुद्रा और लेखा मुद्रा में कोई अन्तर नहीं होता। पर, यदि किसी अन्य करेन्सी में हिसाब रखे जाएं, तो यथार्थ मुद्रा से लेखा मुद्रा में अन्तर होता है। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद जर्मनी में ऐसा ही हुआ था जब लेखा मुद्रा तो अमरीकी डालर थी और यथार्थ मुद्रा मार्क थी। परन्तु दोनों में अन्तर भी हो सकता है— जब मुद्रा के रूप में मुद्रा का मूल्य और वस्तु के रूप में मुद्रा का मूल्य भिन्न हों। उदाहरणार्थ, लेखा मुद्रा के रूप में भारतीय रुपये का मूल्य स्थिर रहा है। परन्तु वस्तु के रूप में भारतीय रुपये का मूल्य या यथार्थ मुद्रा समयोपरि परिवर्तित हो रहा है, अर्थात् यह असीमित वैध मुद्रा है। यह प्रतीक सिक्का या मुद्रा है जिसका वर्तमान वास्तविक मूल्य उसके 1939 के अंकित मूल्य की तुलना में नगण्य है।

4. मुद्रा तथा निकट मुद्रा (MONEY AND NEAR MONEY)*

मुद्रा, करेन्सी और बैंक जमा से बनती है। किसी देश के केन्द्रीय बैंक द्वारा जारी किए हुए सिक्के और करेन्सी नोट, और देश के कमर्शियल बैंकों के चैक तरल परिसम्पत्ति होती है। चैक और बैंक ड्राफ्ट दरअसल मुद्रा के लगभग पूर्ण स्थानापन्न होते हैं। ऐसा इसलिए कि वे मुद्रा के विनिमय माध्यम का कार्य करते हैं। परन्तु थोड़े नोटिस पर चैक और बैंक ड्राफ्ट केवल मांग जमा (demand deposit) के संबध में ही जारी किए जा सकते हैं। सावधि जमा (time deposit) के संबंध में यह बात नहीं होती। सावधि जमा या तो नियत अवधि के बाद या बैंक को पहले नोटिस देकर और हरजाना उठाकर

* Inside Money और Outside Money के लिए आगे अध्याय देखिए।

Scanned with CamScanner

निकलवाई जा सकती है। इस प्रकार सावधि जमा वास्तविक मुद्रा नहीं होती, और उसे वास्तविक मुद्रा बनाने के लिए उसे नकदी अथवा मांग जमा में परिवर्तित करना जरूरी है। पर सावधि जमा निकट मुद्रा तो होती है क्योंकि बिना हानि उठाए उसे थोड़ी अवधि में वास्तविक मुद्रा में बदला जा सकता है। उदाहरणार्थ, 10,000 रु. की तीन वर्ष के लिए सावधि जमा को तीन वर्ष से पहले भी मांग जमा अथवा 10,000 रु. नकदी में परिवर्तित किया जा सकता है। उन पर निश्चित दर से ब्याज भी मिलता है। यदि सावधि जमा को नियत समय से पहले नकदी या मांग जमा में बदलवाया जाए, तो सावधि जमा पर मिलने वाले ब्याज की दर कुछ कम हो जाती है। इस प्रकार, निकट मुद्रा परिसम्पत्तियां आरजी तौर पर मुद्रा के मूल्य संचय का काम करती हैं और उन्हें थोड़े नोटिस पर अंकित मूल्य में हानि के बिना, विनिमय के माध्यम में परिवर्तित किया जा सकता है।

सावधि जमा के अतिरिक्त, अन्य निकट मुद्रा सम्पत्तियां ये हैं: बांड, प्रतिभूतियां, डिबेंचर, हुंडियां, ट्रेजरी बिल, बीमा पालिसियां आदि। इन सभी प्रकार की परिसंपत्तियों के लिए बाजार है और ये बेचनीय हैं, इसलिए इन्हें थोड़े से समय में ही वास्तविक मुद्रा में परिवर्तित किया जा सकता है। आगे इस बात पर विचार किया जा रहा है कि ये सभी बेचनीय प्रपत्र (negotiable instruments) क्योंकर निकट मुद्रा हैं।

बांड प्रतिभूतियां तथा डिबेंचर एक ही श्रेणी में आते हैं। बांड तथा प्रतिभूतियों को सरकार जारी करती है जबकि डिबेंचर कंपनियां जारी करती हैं। ये अल्पकालीन, मध्यकालीन तथा दीर्घकालीन अवधि के लिए निधियां (funds) उधार लेने के साधन हैं और इन पर एक निश्चित दर से ब्याज मिलता रहता है। ये इसलिए निकट मुद्रा सम्पत्तियां हैं कि इन्हें मुद्रा-बाजार में थोड़े नोटिस पर ही नकदी में परिवर्तित किया जा सकता है।

मुद्रा का एक अन्य रूप है हुंडी। इसे *IOU* (I owe you अर्थात् मैं आपका देनकार हूं) भी कहते हैं। इसे लिखने वाला किसी फर्म का कोई व्यक्ति होता है जिसमें वह कहता है कि मैं अमुक (किसी निश्चित) को इतनी (उल्लिखित) मुद्रा-राशि का भुगतान कर दूंगा। इसमें दी गई भुगतान की तिथि, लिखने की तिथि के 90 दिन बाद की कभी नहीं होती। हुंडी अपने आपमें तो मुद्रा नहीं होती परन्तु देय तिथि को निश्चय से मुद्रा होती है। परन्तु यदि हुंडी का मालिक उसे नकदी में बदलना चाहे तो वह अवश्य निकट मुद्रा होती है। उसे बट्टे पर या उसके अंकित मूल्य से कम मुद्रा लेकर भुनाया जा सकता है।

सरकार द्वारा जारी किए गए ट्रेजरी बिल भी निकट मुद्रा की श्रेणी में आते हैं। ट्रेजरी बिल ऐसा पत्र होता है जिसमें सरकार की ओर से निकट भविष्य में, आमतौर पर 30, 60 या 90 दिन में उल्लिखित राशि का भुगतान करने का वादा होता है। ट्रेजरी बिल भी एक तरह की हुंडी है, और उसे भी थोड़ी-सी अवधि में बट्टे पर भुनाया जा सकता है।

जीवन बीमा पालिसी भी निकट मुद्रा का एक उदाहरण है। जीवन बीमा पालिसी का धारक थोड़े नोटिस पर ऋण के रूप में नकदी प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार जीवन-बीमा पालिसी भी तरल परिसम्पत्ति का एक रूप है जिसे निकट मुद्रा माना जा सकता है।

निकट मुद्रा के इन मान्यता प्राप्त साधनों के अतिरिक्त कुछ बिचौलिए भी पैदा हो गए हैं जो कुछ परिसम्पत्तियों के लिए मार्केट प्रदान करते हैं। इस तरह के बिचौलिए वे कम्पनियां हैं जो कुछ परिसम्पत्तियों की जमानत पर निधि प्रदान करती हैं और वे दलाल हैं जो सम्पत्ति, बांड, डिबेंचर, शेयर

Scanned with CamScanner

आदि खरीदते और बेचते हैं। वे इस तरह की परिसम्पत्तियों की तरलता बढ़ाते हैं और परिणामत: उन्हें निकट मुद्रा बना देते हैं।

अब मुद्रा और निकट मुद्रा का अन्तर स्पष्ट किया जा सकता है। मुद्रा वैध होती है जो धारक को तत्काल तरलता प्रदान करती है। यह विनिमय के माध्यम का कार्य करती है। दूसरी ओर निकट मुद्रा परिसम्पत्तियों का कोई कानूनी दरजा नहीं होता। उनमें मुद्रात्व अथवा तरलता तो होती है परन्तु मुद्रा जैसी तत्काल तरलता नहीं होती। मूल्य के संचय के रूप में वे मुद्रा के लगभग पूर्ण स्थानापन्न होते हैं। वे मुद्रा से श्रेष्ठ होते हैं, क्योंकि वे आय देते हैं। वे असली मुद्रा के प्रयोग में मितव्ययता भी लाते हैं और लोगों द्वारा विनिमय के माध्यम के रूप में प्रयोग की जाने वाली मुद्रा की मात्रा को कम करते हैं—स्थगित भुगतानों के माध्यम के रूप में और मूल्य के संचय के रूप में।

बावजूद इस बात के कि निकट मुद्रा परिसम्पत्तियों में तत्काल तरलता नहीं होती, लोग उन्हें ही अधिमान देते हैं। प्रो. ए॰जी॰ हार्ट के मतानुसार, ''लोग नकदी की अपेक्षा निकट मुद्रा को अधिमान इसलिए देते हैं कि इसमें रक्षा उद्देश्य की गुंजाइश रहती है।'' प्रो. डीन ने लक्ष्य किया है कि संयुक्त राज्य अमरीका में द्रव्यवत् (निकट) मुद्रा परिसम्पत्तियों की जो बेहद वृद्धि हुई है उसका एक कारण तो यह है कि मांग जमा की अपेक्षा उनसे अधिक आय प्राप्त होती है और दूसरा यह है कि वे नकदी की अपेक्षा अधिक सुरक्षित होती हैं। फिर, मुद्रा परिसम्पत्तियों के रूप में की जाने वाली बचतों को कुछ इस प्रकार की विशेष तकनीकों से प्रोत्साहन दिया जाता है जैसे वेतन-बचत स्कीम और कमर्शियल बैंकों की ऐसी योजनाएं जिनमें ग्राहकों के आदेश पर एक निश्चित राशि नियमित रूप से उन मांग जमा खाते से सावधि जमा खाते में स्थानान्तरित कर दी जाती है।

Scanned with CamScanner